जगदीश राय कुलरियाँ

रिश्तों का सच

ई—मेल-jagdishkulrian@gmail.com

सुबह आए फोन के कारण पति से बातचीत कर मैं शीध्र ही मायके को चल पड़ी थी। कुछ समझ नहीं आ रहा था।. अभी कुछ दिन पहले ही तो वहाँ हो कर आई हूँ , पापा पूरे स्वास्थ थे। हार्ट अटैक का सुन कर बुरे-बुरे ख्याल दिमाग में घूम रहे है। छोटे भाई ने जब यह बताया तो पैरों नीचे से जमीन ही खिसक गई। यह तो कभी सोचा ही न था। भाई ने बताया था कि बडे प्राईवेट हस्पताल में भर्ती हैं। हे भगवान! अब क्या होगा मेरे बिन माँ के भाई का? हम तीनों बहनें तो अपने-अपने घर में सुखी है, पर हर समय उसी की चिंता लगी रहती है। कामकाज तो पहले ही दुकान पर ठीक ठाक सा ही है। गुजर-बसर ही होती है। बाप बेटा बस किसी तरह गाड़ी घसीट रहे हैं। इतने भारी खर्च का बोझ कैसे उठाएगा। अच्छा हुआ कि घर से निकलने समय मैं कुछ रूपये उठा लाई। साथ में दोनों बहनों को भी फोन कर दिया है। अगली पिछली सब बातें याद करती हुई आखिर हस्पताल पहुँच जाती हूँ। दोनों बहनें और भाई मुझे देख कर मेरी तरफ लपकते हैं। भाई मेरे गले लग रोने लगता है..... मैं उसे समझाना शुरू करती हूँ।

“ऐसा मत कर मेरे राजा भैया, कुछ नहीं होगा पिता जी को। भगवान सब ठीक करेगा। हमने किसी का बुरा थोडी किया है। हस्पताल भी सुना है बढिया है, यहाँ पर तो मुर्दे में भी जान डाल देते हैं .... बस तू हिम्मत रख, हम करते है डाक्टरों से बात। रूपये पैसे की भी तू चिंता न कर, हम है ना।’’ आगे बोलते हुए मेरा भी गला भारी हो गया था।

आई. सी.यू. में पापा से मिलने के पश्चात् डाक्टरों से बात करने पर उन्होंने हालत खतरे से बाहर बताते हुए कहा कि एक आप्रेशन जरूरी करना होगा। हम सब ने साथ बैठ कर विचार विर्मश किया तो मैने कहा, “देख भाई! अब आप्रेशन तो कराना ही पड़ेगा। माँ तो पहले ही चली गई है, अब तुम्हारे पास पिता जी ही है। कम से कम तुम्हारा विवाह तो देख लें। साथ में तुम्हें दुकान पर भी इनका सहारा तो है ही।’’

“जी, दीदी अब मेरे पास इनके सिवा और है भी कौन, मैंने तो डाक्टरो को कह दिया है..... मुझे मेरे पापा सलामत चाहिए..... कुछ भी करो। मुझे भी कुछ भी करना पड़े। चाहे मकान और दुकान ही क्यों न बेचनी पड़े, इलाज में किसी तरह की कमी नहीं रहने दूंगा।’’ भाई ने दृढता से कहा।

भाई की बात सुनते ही मुझे भी हौंसला हो गया। मैं कुछ रूपये जो साथ लाई थी, वह पकडाने लगी तो उसने मना कर दिया। कहने लगा, “लड़कियों से पैसे लेते क्या अच्छे लगते हैं? रहने दो। मैं अपने आप कर लूंगा सारा इंतजाम।’’ मुझे देख मेरी दूसरी बहनें भी रूप्ये देने चाहे, किन्तु वह इन्कार करता रहा।

“अगर जरूरत पडी तो बता देगा। हमें तो घर की हालत का पता ही है ।’’ मैं लगातार रूपये पकडने के लिए उस पर जोर डाल रही थी। दूसरी बहने भी उसे दे रही थी पर उसका मना करना जारी था। इतने में मेरी एक बहन बीच में टोकते हुए कहने लगी, “चलो छोडो दीदी, जब भाई को जरूरत होगी तो खुद बता देगा ।’’ और उसने हल्के से मेरा हाथ दबा कर इशारा कर दिया। उस के बाद पता नहीं क्यों मेरा आग्रह भी धीमा पड़ गया।

हिन्दी अनुवाद : लेखक द्वारा स्वयं

जगदीश रॉय कुलरियाँ : जगदीश रॉय कुलरियाँ पंजाबी और हिन्दी भाषा के सक्रिय लघुकथाकार है। लघुकथा लेखन के साथ-साथ संपादन, आलोचना और अनुवाद भी अच्छा कार्य हैं। इन्हे 'साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार' भी मिल चुका है। येह लघुकथा विधा के प्रचार-प्रसार के लिए जो काम कर रहे हैं, वह बहुत बड़ा है। इनके पंजाबी में दो और हिन्दी में एक लघुकथा संग्रह प्रकाशित हो चुका है। इन्होंने कई पुस्तकों का संपादन और अनुवाद किया है। वर्तमान समय में येह त्रैमासिक पत्रिका 'मिन्नी' के संपादक है।